>

Title: Regarding the problems of Bengali Migrants.

श्रीदुर्गादासउईके **(बैतूल):**माननीयअध्यक्षजी, लोकहितकेमुद्देपरआपनेमुझेबोलनेकाअवसरदिया, इसकेलिएमैंहृदयसेआपकेप्रतिआभारव्यक्तकरताहूं ।

अध्यक्षजी, मेरेलोकसभाक्षेत्रबैतूल, हरदा, हरसूद (मध्यप्रदेश) मेंपाकिस्तान-बांग्लादेशविभाजनकेवक्तबर्मातथाबांग्लादेशसेहजारोंबंगालीपरिवारोंनेशरणलीथी । भारतसरकारनेवर्ष 1964 सेवर्ष 1988 तकहमारेआदिवासीक्षेत्रकेविधानसभाघोड़ाडोंगरीकेचोपनाक्षेत्रमेंरहनेकेलिएउनकोजमीनदीथी ।वहांसैकड़ोंपरिवारजमीन, पट्टेऔरअपनेजातिकेनिर्धारणकेलिए 50 वर्षोंसेसततसंघर्षकररहेहैं ।मेरेलोकसभाक्षेत्रमेंलगभग 2.5 लाखनिर्वासिततथाविस्थापितबंगालीभाई-बहनोंकीसमस्याकासमाधानबहुप्रतीक्षितहै । हमनिरंतरपत्राचार, ज्ञापनोंऔरविविधप्रकारसेशासन-प्रशासनकाध्यानआकर्षितकरनेकाप्रयासअनेकवर्षोंसेकररहेहैं ।

माननीयअध्यक्षजी, मैंआपकेमाध्यमसेभारतसरकारसेमांगकरताहूंकिमेरेलोकसभाक्षेत्रकेबंगालीभाई-बहनोंकीतकलीफोंकोसंज्ञानमेंलेतथात्वरितनिराकरणकीदिशामेंठोसपहलकरे ।धन्यवाद – जयहिंद ।